IJAMSR

International Conference on Latest Trends in Science, Engineering, Management and Humanities (ICLTSEMH -2025)
19th January, 2025, Noida, India.

CERTIFICATE NO : ICLTSEMH /2025/C0125229

मध्ययुगीन काल में सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन

Savita Kumari

Research Scholar, Ph. D. in History, P.K. University, Shivpuri, M.P., India.

सारांश

मध्ययुगीन काल में महिलाओं की सामाजिक भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण रही, हालांकि इसे अक्सर ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अनदेखा किया गया है। इस काल में महिलाओं ने न केवल घरेलू जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में भी अपनी पहचान बनाई। महिलाओं का प्रमुख कर्तव्य घर और परिवार की देखभाल करना था, लेकिन इसके साथ ही उन्होंने कृषि, व्यापार और हस्तशिल्प में भी सहयोग दिया। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं कृषि कार्यों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती थीं, जिससे सामाजिक और आर्थिक स्थिरता बनी रहती थी। महिलाएं धार्मिक गतिविधियों में भी सक्रिय रूप से भाग लेती थीं, और कुछ ने संत, कवयित्री या विदुषी के रूप में अपनी पहचान बनाई, जैसे मीराबाई और अक्का महादेवी। इसके अलावा, रानियों और साम्राज्ञियों ने राजनीतिक क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। उदाहरणस्वरूप, रानी दुर्गावती और रजिया सुल्तान ने अपने राज्य की रक्षा और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, महिलाओं की स्थिति में भेदभाव और लैंगिक असमानता का भी सामना करना पड़ा। उन्हें अक्सर शिक्षा और अधिकारों से वंचित रखा गया, लेकिन उन्होंने अपनी दृढ़ता और संघर्ष के माध्यम से सामाजिक विकास में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।